संदर्भ क्र. : 1430

दिनांक : 27 JUN 2025

महत्वपूर्ण सुचना

विषय : - "संगीत संस्कार" एक नया अभ्यासक्रम - व्यक्तित्व विकास में संगीत की भूमिका

मनुष्य की बाल्यावस्था में उस पर किये गये संस्कार उसे एक सक्षम तथा संवेदनशील नागरिक बनाने में अपूर्व योगदान देते हैं। संगीत, एक मन का विषय है। इसलिए मनुष्य के मनोमस्तिष्क पर इसका गहरा प्रभाव होता है। सभी ने व्यक्ति विकास के लिए संगीत को एक आदर्श माध्यम माना है | मनोवैज्ञनिक दृष्टीकोणसे संगीत के प्रशिक्षण द्वारा विद्यार्थियोंकी जिज्ञासा, एकाग्रता, एकात्मता, स्मृति, कल्पना, अभ्यास, सृजनशीलता आदि विकासात्मक घटकों में वृद्धि होती है। संगीत, व्यक्ति के ध्वनिसंवेदनाओं को सुधारता है |

इसलिए माँ की लोरी,श्लोक, बाल कविता, आरती के रूप में इन संस्कारों को अधिक दृढ़ किया जाता है। संगीत के श्रवण से विद्यार्थियों की एकाग्रता बढ़ती है। संगीत के अभ्यास में दृकश्राव्य, दृष्टि, स्पर्श, संतुलन, प्राण आदि सभी संवेदनाएं प्रखर होती हैं। सांगीतिक अध्ययन विद्यार्थी को अपने आप को पहचानने की शक्ति प्रदान करता है। विद्यार्थियों में निरीक्षण शक्ति, स्मरण शक्ति, प्रेरणा अनुसरणशक्ति, कल्पना, रचनात्मकता, संगठनात्मक शक्ति और आंतरिक शक्ति का विकास होता है। बचपन से किया गया संगीत का अभ्यास, विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक शक्ति बढ़ाने में उपयुक्त होता है।

संगीत व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मूलतः संगीत एक शाश्वत आनंद प्रदान करनेवाली विद्या होने के कारण इसके प्रशिक्षण से सांगीतिक वातावरण में रहने से व्यक्ति सकारात्मक हो जाती है। इन सभी बातों का विचार करते हुए, अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय मंडल ने दो वर्ष का संगीत संस्कार शिक्षा पाठ्यक्रम निर्माण किया है । इस पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार वर्ष के अंत में स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा |